Dr. Vandana Suman
Professor
Deptt. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
UG - Sem - IV - MJC - 07
Basic Concepts of Philosophy

1.

"Causation: Sat-Karya Vada and Asat Karya Vada"

(कार्य कारणभाव : सत्कार्यवाद और असत्कार्यवाद)

सांख्य तत्त्वप्रधान दर्शन है। 'सत्कार्यवाद' सांख्य दर्शन का अत्यन्त ही सूक्ष्म एवं वैज्ञानिक सिद्धान्त है। 'सत्कार्यवाद' के अनुसार, कार्य की सत्ता उसकी उत्पत्ति से पूर्व, कारण में विद्यमान रहती है। किन्तु दर्शन के कुछ अन्य संप्रदाय इस मत को नहीं मानते हैं। इनमें प्रमुखता बौद्धों की है। बौद्धों का अभिमत है कि 'असत' से सत उत्पन्न होता है। इनके मत से समस्त भाव पदार्थ क्षणिक है और इसलिए इन क्षणिक भाव पदार्थों में कार्य-कारण भाव हो ही नहीं सकता है। न्याय और वैशेषिक भी यही मानते हैं कि यदि कार्य की सत्ता उसकी उत्पत्ति से पूर्व कारण में विद्यमान रहती है तो फिर कार्य के उत्पन्न होने का आशय ही क्या रह जाता है? जैसे यदि मिट्टी में घड़ा पहले ही विद्यमान था तो फिर कुम्हार तथा चाक घुमाने की आवश्यकता क्यों होती है? और कार्य तथा कारण के भेद को बताने के लिए हमारे पास क्या आधार रह गया है? क्यों नहीं मिट्टी को ही घड़ा कह लिया जाता है और घड़े से जो कार्य लिया जाता है, मिट्टी से ही क्यों नहीं संपन्न किया जाता? यदि घट

और मूर्तिका जो स्वरूप तथा आकार की भिन्नता है तब भी यही बात सिद्ध होती है घड़े (कारण) में कुछ ऐसी विशेषता का समावेश हो गया है, जो मिट्टी (कारण) में नहीं थी।

इसलिए यह मानना सर्वथा अनिसंगत एवं व्यावहारिक है कि कार्य की उत्पत्ति से पूर्व उसमें कारण विद्यमान नहीं था। यही 'असत्कार्यवाद का सिद्धान्त है।

सांख्य दार्शनिक न्याय वैशेषिकों के असत्कार्यवाद का खण्डन करते हुये 'सत्कार्यवाद का प्रतिपादन करते हैं। ईश्वर कृष्ण ने सांख्य कारिका में तर्क दिया है—

"असदकारणादुपादानग्रहणात् सर्वसम्भवाभावात्। शक्तस्यशक्यकरणात् कारणभावाच्चसत्कार्यम्

यदि कार्य वस्तुतः कारण में अविद्यमान (असत) रहता है तो

कार्य की उत्पत्ति किसी भी प्रकार संभव नहीं होती क्योंकि असत् से सत् की उत्पत्ति असंभव है। बालू से तेल नहीं निकल सकता क्योंकि बालू में तेल का अभाव (असत) है। उत्पत्ति तो अभिव्यक्ति मात्र है। कार्य कारण में पहले से ही विद्यमान (सत्) रहता है। यह तर्क गीता के इस वक्तव्य के

तात्पर्य यह है
नासतो विद्यते भावः नाभावो विद्यते सतः।
प्रायः ऐसा देखा जाता है कि किसी विशेष कार्य का प्रादुर्भाव किसी विशेष कारण से होता है जैसे - दही दूध से ही बनता है या तेल, तिल से ही निकलता है। मिट्टी से दही नहीं बन सकता और बालू से तेल नहीं निकल सकता। अतएव स्पष्ट है कि किसी कार्य विशेष की उत्पत्ति के लिए उपादान विशेष की ही आवश्यकता होती है, जिसमें कि कार्य पहले से ही विद्यमान (सत) रहता है।

यदि कार्य सचमुच कारण में अविद्यमान रहता तो उसका अर्थ यह होता कि असत से सत की उत्पत्ति होती। अर्थात शून्य से किसी भी वस्तु का प्रादुर्भाव हो जाता किन्तु ऐसा लोकानुभव के आधार पर नहीं देखा जाता है। सभी वस्तुओं से दूसरी सभी वस्तुओं की उत्पत्ति असंभव होना यह सिद्ध करता है कि कार्य असत नहीं होता। केवल समुचित कारण से ही अभीष्ट कार्य की प्राप्ति हो सकती है। इससे यह सिद्ध होता है कि कार्य सूक्ष्म रूप से अपने कारण में विद्यमान रहता है।

वस्तुतः कार्य कारण का

भिन्न नहीं, अभिन्न है। एक ही वस्तु की अव्यक्त और व्यक्त अवस्था को क्रमशः 'कारण' और 'कार्य' नाम से जानते हैं। सूक्ष्म धागा या कपड़ा धागों से पृथक नहीं है और टेबल लकड़ी से भिन्न नहीं है। अतः स्पष्ट है कि कार्य स्वाभिव्यक्ति के पूर्व कारण में विद्यमान रहता है।

सत्कार्यवाद को दो भागों में बाँटा जा सकता है —

1. परिणामवाद
2. विवर्त्त वाद।

सांख्य दर्शन परिणामवादी होता है।

परिणामवाद के प्रकार —

परिणाम को भी दो भागों में विभक्त किया जा सकता है — (1) प्रकृति परिणामवाद (2) ब्रह्म परिणामवाद।

ब्रह्मपरिणामवाद, यह रामानुज, वल्लभ आदि वेदान्तियों द्वारा स्वीकृत सिद्धान्त है। इसके अनुसार ब्रह्म स्वयम् जगत रूप में परिणत होता है। जैसे - दूध दही में परिणत होता है। इस तरह इस सिद्धान्त के अनुसार जगत ब्रह्म का वास्तविक विकार होता है। प्रकृति परिणामवाद, यह सांख्य दर्शन स्वीकृत सिद्धान्त है। इनका विचार है कि "प्रकृति"

ही जगत रूप में परिणत होती है। इसतरह ब्रह्म परिणामवाद से अलग यहाँ प्रकृति को कारण माना गया है लेकिन ब्रह्म परिणामवाद के समान यहाँ भी जगत को प्रकृति का वास्तविक विकार माना गया है।

इसतरह सांख्य दर्शन 'प्रकृति परिणामवाद' के नाम से सत्कार्यवाद का समर्थन करता है।

यहाँ कुछ इसतरह के सवाल किये जाते हैं। जैसे - प्रकृति क्या है? क्या प्रकृति अकेली ही जगत की उत्पत्ति कर लेती है अथवा उसे किसी अन्य तत्व की इस हेतु आवश्यकता होती है? उससे किस प्रकार जगत उत्पन्न होता है? आदि। सांख्य दार्शनिकों ने इन प्रश्नों पर गहराई पूर्वक विचार किया है।

यह सम्पूर्ण सृष्टि शरीर इन्द्रिय, मन और बुद्धि आदि कार्य रूप पदार्थों से बनी है। इन कार्य रूप पदार्थों के मूल में निश्चित ही कोई कारण रूप मूलतत्व ऐसा विद्यमान है जिसके संयोग से इनकी उत्पत्ति होती है। सांख्य-दर्शन में इसी मूल कारण को 'प्रकृति' कहा गया है।